ललित सुरजन

खैरागढ़ का नाम सुनकर शायद बहुत से पाठकों को याद आए कि एशिया का पहिला कला-संगीत विश्वविद्यालय इस नगर में स्थापित है। उसकी चर्चा बाद में कभी। फिलहाल हमारे सामने जो दृश्य है, उसकी बात। हम जो अतिथि यहां आए हैं सब छत्तीसगढ़ प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़े हुए हैं। संस्था की एक योजना 'पाठक मंच' के नाम से गत 13-14 वर्ष से संचालित हो रही है। एक पाठक मंच खैरागढ़ में भी है जिसके संयोजक डॉ. प्रशांत झा हैं।

सारे अतिथि आ चुके हैं। जलपान के साथ स्वागत हो गया है। अब सभास्थल की ओर चलना है। लाउडस्पीकर से लगातार घोषणा हो रही है कि कार्यक्रम प्रारंभ होने ही वाला है। स्वागत गृह से सभास्थल दूर नहीं है, बस यही कोई दो-ढाई सौ मीटर या एक फर्लांग। आगे-आगे नवयुवाओं की टोली ढोल-नगाड़ा बजाते चल रही है। दस मिनट में दूरी तय हो जाती है। सामने चौपाल में दरियां बिछी हैं। अच्छी खासी संख्या में श्रोता आ भी चुके हैं। आने का क्रम जारी है। सरस्वती वंदना, अतिथियों की आरती, फूलमाला, टीके से स्वागत होते-होते तक पांचेक सौ जन तो आ ही गए हैं, लेकिन लोगों का आना अभी भी जारी है। इनमें एक तिहाई संख्या महिलाओं की होगी। वे घर का कामकाज निबटाकर आ रही हैं। अनेक की गोद में या फिर अंगुली पकड़े बच्चे भी हैं। पुरुष श्रोता भी फुर्सत के भाव में आए हैं। दरी पर जगह नहीं है तो कोई घर की दहलीज पर बैठा है, कोई चबूतरे पर, कोई खुली बैलगाड़ी पर और सामने छत पर भी तो 15-2 नौजवान डटे हुए हैं। समय रात आठ बजे का हो चुका है। दृश्य गांव का है। गांव में बिजली है, डीटीएच और बुद्धू बक्सा भी, किन्तु आज की रात टीवी सेट खामोश हैं। ये सब जन सामने गांव के सार्वजनिक सांस्कृतिक मंच पर विराजमान अतिथियों को सुनने के लिए आए हैं। मेला तो नहीं है, लेकिन चहल-पहल अच्छी-खासी है।

इस गांव का नाम है- ईटार। छत्तीसगढ़ के कस्बे खैरागढ़ से उत्तर-पश्चिम में कोई 13 किमी दूर। गांव के थोड़ा आगे ही जंगल का इलाका प्रारंभ हो जाता है। खैरागढ़ का नाम सुनकर शायद बहुत से पाठकों को याद आए कि एशिया का पहिला कला-संगीत विश्वविद्यालय इस नगर में स्थापित है। उसकी चर्चा बाद में कभी। फिलहाल हमारे सामने जो दृश्य है, उसकी बात। हम जो अतिथि यहां आए हैं सब छत्तीसगढ़ प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़े हुए हैं। संस्था की एक योजना 'पाठक मंच' के नाम से गत 13-14 वर्ष से संचालित हो रही है। एक पाठक मंच खैरागढ़ में भी है जिसके संयोजक डॉ. प्रशांत झा हैं। ईटार प्रशांतजी का गांव हैं और उनके निमंत्रण पर ही हम उपस्थित हैं। पेशे से भले ही डॉक्टर हों, किन्तु वे एक साहित्यिक अभिरुचि संपन्न व्यक्ति हैं। यह बात उनके मन में उठी कि शहरों में और बड़ी जगहों पर तो साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम आए दिन होते ही रहते हैं, संस्कृतिकर्मियों को, साहित्यकारों को उससे आगे बढ़कर गांवों का रुख भी करना चाहिए। अन्य कोई संस्था ऐसा करे या न करे, जिस संस्था से वे जुड़े हुए हैं, वह तो ऐसा कर ही सकती है। फिर अगर प्रयोग ही करना है तो अपने निज गांव से बेहतर स्थान और कौन-सा हो सकता है?

बस यह बात उनके मन घर कर गई और उन्होंने ठान लिया कि पाठक मंच की खैरागढ़ इकाई का एक कार्यक्रम वे अपने गांव में करके ही रहेंगे। इसके लिए उन्होंने पाठक मंच की सामान्य गतिविधि से हटकर कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई, ताकि ग्रामजनों की रुचि व सहभागिता उसमें हो सके। उन्होंने ''चलो गांव की ओर'' यह नाम भी अपने इस कार्यक्रम के लिए तय कर लिया। पाठक मंच में सामान्यतः पुस्तक चर्चा होती है, उन्होंने इसमें कवि सम्मेलन का भी समावेश कर लिया। इस तरह ईटार में 3 जून की रात साढ़े 7 बजे से 4 जून की सुबह 1 बजे तक यह अद्‌भुत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसकी संक्षिप्त झलक मैंने प्रारंभ में आपको दी। कवि सम्मेलन सुनकर जो तस्वीर आपके मन में उभरती है, यह कवि सम्मेलन वैसा बिलकुल भी नहीं था। आसंदी पर जो कविगण विराजमान थे, उनमें से 2 या 3 ऐसे अवश्य थे जो कवि सम्मेलनों के मंच पर जाते रहे हैं, किन्तु वे सब अपनी अर्थगंभीर रचनाशीलता के लिए जाने-जाते हैं। उनमें से एक भी तुक्कड़ नहीं था, जोकर नहीं था, हास्य रस या वीर रस की वर्षा करने वाला नहीं था। दो घंटे तक कवि सम्मेलन चला, नौ या दस साथियों ने कविताएं सुनाईं और श्रोतागण मुग्ध होकर पूरे समय उनको सुनते रहे।

ईटार के इतिहास में संभवतः यह पहिला ही कवि सम्मेलन होगा। इसके पूर्व हो सकता है कि कुछेक खैरागढ़ या अन्य कहीं कथित कवि सम्मेलनों में श्रोता के रूप में हाज़िर रहे हों; अनेक ने शायद टीवी पर वाह! वाह! जैसे कार्यक्रम देखे होंगे। कुल मिलाकर कवि सम्मेलन जैसे कार्यक्रम के बारे में ग्रामजनों की क्या अवधारणा अब तक